अध्याय 14: शिरीष के फूल

विषय-सूची 3 प्रश्नावली · 12 प्रश्न

प्रश्नावली 14.1	पाठ के साथ	9 प्रश्न
प्रश्नावली 14.2	पाठ के आसपास	2 प्रश्न
प्रश्नावली 14.3	भाषा की बात	1 प्रश्न

प्रश्नावली 14.1 — पाठ के साथ

प्रश्न 1

लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है?

हल

लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की संज्ञा इसलिए दी है क्योंकि शिरीष का वृक्ष जेठ की जलती धूप, भीषण लू, उमस — अर्थात् प्रकृति की चरम प्रतिकूलताओं के बीच भी अविचल, शांत और पुष्पित रहता है।
अवधूत वह होता है जो सांसारिक बंधनों और विषय-वासनाओं से ऊपर उठ जाता है — वह सुख-दुख, प्रतिकूलता-अनुकूलता से निर्लिप्त रहता है। शिरीष का व्यवहार ठीक इसी प्रकार का है।
पाठ में लेखक लिखते हैं: 'जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है।'
शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर बना रहता है — कोमल फूल खिलाता है और कठोर फल धारण करता है।
शिरीष न किसी से लेता है न किसी को देता है — 'न ऊधो का लेना, न माधो का देना।' यह निर्लिप्तता ही अवधूत का लक्षण है।
'कालजयी' विशेषण इसलिए उचित है क्योंकि शिरीष वसंत से आषाढ़ तक और भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है — समय की मार उसे नहीं रोक पाती।

उत्तर: शिरीष को कालजयी अवधूत इसलिए माना गया है क्योंकि वह भीषण लू, उमस और गरमी में भी निर्लिप्त भाव से खिलता रहता है — जैसे कोई अवधूत संन्यासी सुख-दुख, प्रतिकूलता-अनुकूलता से ऊपर रहता है।

प्रश्न 2

हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है — प्रस्तुत पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

हल

शिरीष के पुष्प अत्यंत कोमल होते हैं — कालिदास ने कहा है कि वे केवल भौंरों के कोमल पदों का दबाव सहन कर सकते हैं, पक्षियों का बिलकुल नहीं।
किंतु उसी शिरीष के फल इतने कठोर और मजबूत होते हैं कि नए फूलों के आ जाने पर भी स्थान नहीं छोड़ते — जब तक नए फल-पत्ते मिलकर धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते, वे डटे रहते हैं।

इस प्रकार शिरीष भीतर से कोमल और बाहर से कठोर है। यह कठोरता उसके अस्तित्व की रक्षा के लिए आवश्यक है।

इसी तरह गांधीजी के व्यक्तित्व में भी कोमलता और कठोरता का यह संतुलन था — वे वायुमंडल से रस खींचकर इतने कोमल और इतने कठोर हो सके थे।

लेखक का संदेश यह है कि हृदय की संवेदनशीलता, सहानुभूति और कोमलता बनाए रखने के लिए बाहरी व्यवहार में कठोरता और दृढ़ता की आवश्यकता होती है — अन्यथा संसार की प्रतिकूलताएँ उस कोमलता को नष्ट कर देती हैं।

उत्तर: शिरीष के पुष्प भीतर से कोमल हैं, किंतु उसके फल बाहर से अत्यंत कठोर हैं — यही संतुलन उसे जीवित रखता है। इसी प्रकार हृदय की कोमलता बचाने के लिए व्यवहार में कठोरता आवश्यक है, जैसा गांधीजी के व्यक्तित्व में था।

प्रश्न 3

द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करें।

हल

शिरीष का वृक्ष जेठ की जलती धूप, भीषण लू, उमस, आँधी — सभी प्रतिकूल परिस्थितियों में अविचल रहकर फूलता-फलता रहता है। यह उसकी अदम्य जिजीविषा (जीने की इच्छाशक्ति) का प्रतीक है।

शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर जीवित रहता है — वह बाह्य परिस्थितियों पर निर्भर नहीं है बल्कि अपने भीतर से शक्ति ग्रहण करता है।

लेखक का संदेश है कि व्यक्ति को भी संसार के कोलाहल, संघर्ष और विपत्तियों में शिरीष की तरह अडिग रहना चाहिए — न घबराना, न झुकना।

लेखक ने गांधीजी का उदाहरण दिया है जो देश पर टूटे मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट के बवंडर के बीच भी अवधूत की तरह स्थिर रहे।

शिरीष का संदेश 'जिजीविषा' यानी जीने की अदम्य इच्छा का है — जो किसी भी परिस्थिति में हार न माने, निरंतर आगे बढ़ता रहे।

उत्तर: शिरीष भीषण गरमी, लू और उमस में भी अविचल रहकर फूलता-फलता है — वायुमंडल से रस खींचकर। लेखक ने इसे मनुष्य की अजेय जिजीविषा का प्रतीक बताया है और गांधीजी के उदाहरण से यह सिद्ध किया है कि विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिर रहा जा सकता है।

प्रश्न 4

'हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!' ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे?

हल

लेखक ने शिरीष को 'अवधूत' कहा है जो आत्मबल का प्रतीक है — वह वायुमंडल से रस खींचकर, बिना किसी बाह्य सहारे के, शांतिपूर्वक जीता और खिलता है।

गांधीजी ने भी इसी आत्मबल के सहारे देश की आज़ादी के लिए संघर्ष किया। उन्होंने देह-बल यानी शारीरिक शक्ति या हिंसा का सहारा नहीं लिया।

'हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!' — यह विलाप इसलिए है क्योंकि गांधीजी के जाने के बाद उनके मूल्य — अहिंसा, सत्याग्रह, आत्मबल — तेज़ी से विलुप्त हो रहे हैं।

वर्तमान सभ्यता में देह-बल (हिंसा, शारीरिक शक्ति, धन-बल) का वर्चस्व बढ़ रहा है। मार-काट, अग्निदाह और लूट-पाट का बवंडर — यह देह-बल का ही प्रकटीकरण है।

लेखक का संकेत है कि जब तक शिरीष जैसा आत्मबल और गांधीजी जैसा अवधूत व्यक्तित्व समाज में न हो, तब तक समाज की कोलाहल और हिंसा में आत्मिक स्थिरता नहीं आ सकती।

उत्तर: लेखक का विलाप इसलिए है क्योंकि गांधीजी — शिरीष जैसे अवधूत, आत्मबल के प्रतीक — के जाने के बाद उनके मूल्य लुप्त हो रहे हैं और समाज में देह-बल (हिंसा) का वर्चस्व बढ़ रहा है। यही वर्तमान सभ्यता का संकट है।

प्रश्न 5

कवि (साहित्यकार) के लिए अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय — एक साथ आवश्यक है। ऐसा विचार प्रस्तुत कर लेखक ने साहित्य-कर्म के लिए बहुत ऊँचा मानदंड निर्धारित किया है। विस्तारपूर्वक समझाएँ।

हल

लेखक ने कालिदास का उदाहरण देते हुए बताया है कि वे 'अनासक्त योगी की स्थिर-प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय' — दोनों एक साथ रखते थे। इसीलिए वे महान कवि बन सके।

अनासक्त योगी की स्थिर-प्रज्ञता का अर्थ है — सुख-दुख, सफलता-असफलता, प्रशंसा-निंदा में विचलित न होना। ऐसा कवि ही जीवन की समग्र वास्तविकता को निष्पक्ष भाव से देख सकता है।

विदग्ध प्रेमी का हृदय का अर्थ है — संसार की हर वस्तु, प्रकृति, मनुष्य के प्रति गहरी संवेदनशीलता और प्रेम। बिना इसके कवि जीवन की गहराइयों को नहीं छू सकता।

यदि कवि केवल अनासक्त हो तो वह शुष्क और निर्भाव हो जाएगा। यदि केवल प्रेमी हो तो भावावेश में बह जाएगा और संतुलन खो देगा।

लेखक ने शिरीष को इसी दोहरे गुण का प्रतीक बताया — कोमल पुष्पों में प्रेमी का हृदय और भीषण गरमी में अविचल रहने में योगी की स्थिर-प्रज्ञता।

कालिदास इसलिए महान थे क्योंकि वे इस दुर्लभ संतुलन को साध सके थे — 'दुख हो कि सुख, वे अपना भाव-रस उस अनासक्त कृषीवल की भाँति खींच लेते थे जो निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकाल लेता है।'

उत्तर: लेखक के अनुसार सच्चे कवि को योगी की निर्लिप्तता (अनासक्ति) और प्रेमी की गहरी संवेदनशीलता — दोनों एक साथ चाहिए। अकेली अनासक्ति कवि को शुष्क बनाती है और अकेला प्रेम उसे भावावेश में बहा देता है। कालिदास और शिरीष दोनों इस दुर्लभ संतुलन के उदाहरण हैं।

प्रश्न 6

सर्वग्रासी काल की मार से बचते हुए वही दीर्घजीवी हो सकता है, जिसने अपने व्यवहार में जड़ता छोड़कर नित बदल रही स्थितियों में निरंतर अपनी गतिशीलता बनाए रखी है। पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

हल

पाठ में शिरीष के पुराने फलों का उदाहरण है जो नए फूल-पत्तों के आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते — वे जड़ता के प्रतीक हैं। ऐसे पुराने नेताओं की तरह जो जमाने का रुख नहीं पहचानते।

लेखक ने तुलसीदास का उद्धरण दिया है: 'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना!' — अर्थात् जो फला वह झड़ेगा ही, जो जला वह बुझेगा ही।

काल (समय) की गति से कोई नहीं बच सकता, किंतु जो अपने व्यवहार में गतिशीलता बनाए रखता है वह अपेक्षाकृत अधिक समय तक टिकता है।

पाठ में लिखा है: 'दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है... हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे!'

शिरीष इस तत्त्व को जानता है — वह हर ऋतु में, हर परिस्थिति में अपना रस खींचकर जीता रहता है। वह जड़ नहीं होता बल्कि निरंतर गतिशील रहता है।

उत्तर: पाठ के अनुसार 'जमे कि मरे' — जो जड़ होकर बैठा रहा वह काल का शिकार हुआ। शिरीष की तरह जो गतिशील रहा, बदलती परिस्थितियों के अनुसार ढला, वही दीर्घजीवी हुआ। जड़ता मृत्यु है, गतिशीलता जीवन।

प्रश्न 7(क)

आशय स्पष्ट कीजिए — (क) दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख बचा पाएँगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे।

हल

इस उद्धरण में लेखक जीवन और काल (मृत्यु/समय) के बीच के शाश्वत संघर्ष को उजागर करता है।

'दुरंत प्राणधारा' = जीवन की वह अदम्य धारा जो आगे बढ़ती रहना चाहती है; 'कालाग्नि' = वह सर्वव्यापी काल-शक्ति जो सब कुछ नष्ट करती है।

जो लोग सोचते हैं कि एक ही स्थान पर जड़ होकर बैठे रहने से काल उन्हें नहीं देख पाएगा — वे मूर्ख हैं। काल की दृष्टि से बचा नहीं जा सकता।

किंतु जो गतिशील रहता है, परिवर्तन को स्वीकार करता है, आगे बढ़ता रहता है — वह अपेक्षाकृत अधिक समय तक जीवित रहता है।

'जमे कि मरे' — यह सूत्र-वाक्य है: जड़ता ही मृत्यु है, गतिशीलता ही जीवन। शिरीष का पेड़ इसी सिद्धांत को व्यवहार में चरितार्थ करता है।

उत्तर: जीवन और काल के बीच निरंतर संघर्ष है। जो जड़ होकर बैठा रहता है वह काल के प्रहार से बच नहीं सकता। गतिशीलता ही जीवन है — 'जमे कि मरे।'

प्रश्न 7(ख)

आशय स्पष्ट कीजिए — (ख) जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है? — मैं कहता हूँ कवि बनना है मेरे दोस्तो, तो फक्कड़ बनो।

हल

लेखक के अनुसार कवि का सबसे आवश्यक गुण है अनासक्ति — सांसारिक लाभ-हानि, प्रशंसा-निंदा, सफलता-असफलता से निर्लिप्त रहना।

'फक्कड़' वह है जो किसी बात की परवाह नहीं करता — न यश की, न अपयश की। वह स्वतंत्र भाव से जीता और सृजन करता है।

जो कवि 'किए-कराए का लेखा-जोखा' मिलाता रहता है — यानी अपनी रचनाओं का फायदा-नुकसान, प्रतिष्ठा-अप्रतिष्ठा नापता रहता है — वह सच्चा कवि नहीं हो सकता।

शिरीष इसी फक्कड़ाने मस्ती का प्रतीक है — 'न ऊधो का लेना, न माधो का देना।' उसी मस्ती से शिरीष के फूल उपजते हैं और उसी से 'मेघदूत' जैसा काव्य संभव होता है।

कालिदास इसीलिए महान थे — वे इसी अनासक्त, फक्कड़ स्थिति में रह सके थे।

उत्तर: लेखक का आशय है कि सच्चा कवि वही है जो अनासक्त और फक्कड़ हो — जो सांसारिक लाभ-हानि का हिसाब न लगाए। शिरीष और कालिदास इसी फक्कड़ाने मस्ती के उदाहरण हैं।

प्रश्न 7(ग)

आशय स्पष्ट कीजिए — (ग) फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है। वह इशारा है।

हल

यह विचार लेखक ने रवींद्रनाथ ठाकुर के एक उद्धरण के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

रवींद्रनाथ ने लिखा था कि राजोद्यान का सिंहद्वार — चाहे कितना भी ऊँचा और सुंदर हो — यह नहीं कहता कि 'हम में आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया।' वह द्वार आगे जाने का इशारा करता है।

इसी प्रकार प्रकृति की कोई भी वस्तु — फूल, पेड़, पहाड़, नदी — अपने-आप में पूर्ण नहीं है। वह उस परम सत्ता, उस अनंत सौंदर्य की ओर इशारा करती है जो उसके पीछे है।

शिरीष का फूल भी अपने-आप में उद्देश्य नहीं है — वह मनुष्य की अजेय जिजीविषा, अनासक्ति, और उस अनंत जीवन-शक्ति की ओर संकेत करता है।

कला, साहित्य और प्रकृति — ये सब उस परम अनुभव की ओर 'उठी हुई अँगुली' हैं जिसे शब्दों में बाँधा नहीं जा सकता।

उत्तर: फूल या पेड़ — ये सब किसी परम सत्य, परम सौंदर्य की ओर इशारा करते हैं। वे अपने-आप में पूर्ण नहीं हैं, बल्कि उस अनंत की ओर 'उठी हुई अँगुली' हैं। शिरीष का फूल भी अजेय जिजीविषा और अनासक्ति की ओर इशारा है।

प्रश्नावली 14.2 — पाठ के आसपास

प्रश्न 1

शिरीष के पुष्प को शीतपुष्प भी कहा जाता है। ज्येष्ठ माह की प्रचंड गरमी में फूलने वाले फूल को शीतपुष्प संज्ञा किस आधार पर दी गई होगी?

हल

शिरीष ज्येष्ठ (जेठ) माह की प्रचंड गरमी में खिलता है — जब धरती निर्धूम अग्निकुंड बनी होती है।
इसे शीतपुष्प कहने के संभावित आधार:
प्रथम — शिरीष के फूलों की कोमलता और सुकुमारता इतनी अधिक है कि वे भौंरों के पदों का ही कोमल स्पर्श सह सकते हैं — उनकी बनावट शीतल प्रतीत होती है।
द्वितीय — भीषण गरमी और लू के बीच शिरीष के फूल देखने वाले को मानसिक और भावनात्मक शीतलता प्रदान करते हैं। गरमी में भी जो शांति और ताजगी का अनुभव कराए, वह 'शीत' कहलाता है।
तृतीय — लोक में शिरीष को शीतल स्वभाव का माना गया होगा क्योंकि भीषण ताप में भी वह अविचल और प्रसन्न रहता है — जैसे कोई शीतल-स्वभाव अवधूत।

उत्तर: शिरीष को 'शीतपुष्प' संभवतः इसलिए कहा गया क्योंकि भीषण गरमी में खिलकर वह देखने वाले को मानसिक शीतलता देता है, और उसके फूल स्वभाव से इतने कोमल हैं कि वे शीतलता का बोध कराते हैं।

प्रश्न 2

कोमल और कठोर दोनों भाव किस प्रकार गांधीजी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए।

हल

लेखक ने शिरीष और गांधीजी के बीच एक गहरी समानता स्थापित की है।
शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है — उसके पुष्प अत्यंत सुकुमार हैं किंतु फल अत्यंत दृढ़।
उसी प्रकार गांधीजी वायुमंडल से रस खींचकर — अर्थात् समाज की पीड़ा, जनता की आवाज़ और सत्य से शक्ति लेकर — इतने कोमल और कठोर हो सके।
गांधीजी की कोमलता: वे हर व्यक्ति के प्रति गहरी करुणा, प्रेम और सहानुभूति रखते थे — शोषितों, पीड़ितों, महिलाओं के प्रति विशेष संवेदनशीलता।
गांधीजी की कठोरता: वे सत्य और अहिंसा के मार्ग से किसी भी दबाव में नहीं हटते थे — अंग्रेजी साम्राज्य के समक्ष भी अडिग रहे।
देश पर टूटे मार-काट और अग्निदाह के बवंडर के बीच भी वे शिरीष की तरह स्थिर रहे — यही उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी।

उत्तर: गांधीजी शिरीष की तरह वायुमंडल से — अर्थात् समाज की पीड़ा और सत्य से — रस खींचकर भीतर से कोमल (करुणामय) और बाहर से कठोर (अडिग) थे। देश की विपत्तियों में भी वे अवधूत की तरह स्थिर रहे।

प्रश्नावली 14.3 — भाषा की बात

प्रश्न 1

'दस दिन फूले और फिर खंखड़-खंखड़' — इस लोकोक्ति से मिलते-जुलते कई वाक्यांश पाठ में हैं। उन्हें छाँट कर लिखें।

हल

पाठ में निम्नलिखित वाक्यांश इस लोकोक्ति से मिलते-जुलते हैं जो क्षणभंगुर वैभव या फिर पतन की बात करते हैं:

1. 'दिन दस फूला फूलिके खंखड़ भया पलास!' — यह कबीरदास की पंक्ति है जो पाठ में उद्धृत है; इसी से वह लोकोक्ति बनी है।
2. 'ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले।' — जो थोड़े समय के लिए फूलकर फिर झड़ जाएँ, उनसे बेहतर वे हैं जिनके पास कुछ न हो किंतु जो स्थायी हों।
3. 'जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना!' (तुलसीदास) — जो फला वह झड़ा, जो जला वह बुझा।
4. 'जमे कि मरे!' — जो जड़ होकर बैठ गया वह मरा।

उत्तर: पाठ में मिलते-जुलते वाक्यांश: (1) 'दिन दस फूला फूलिके खंखड़ भया पलास!' (2) 'ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले।' (3) 'जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना!' (4) 'जमे कि मरे!' — ये सभी क्षणिक वैभव और अनिवार्य पतन की ओर संकेत करते हैं।